साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 54, फरवरी(प्रथम) , 2019

गद्गद्

डॉ०दीपा गुप्ता

दीवार पर लटकते आइना में अपना चेहरा देखते हुए सिपाही रामसेवक आज ही काले किये हुए बालों को दाहिने हाथ की उँगलियों से सँवार रहा है। कंघी पकड़ कभी तिरछी माँग निकालता तो कभी अपने से ही बातें करते तिरछी माँग को अस्वीकारते हुए सिर झटक बालों को पीछे लहरा देता। कभी-कभी बिन कंघी किये ही निकल जाने वाला रामसेवक आज आधे घंटे से आइना के सामने खड़ा है। पोड्स पाउडर के बगल में रखे हुए फेयर एंड लवली को उठाकर हथेली पर थोड़ा पिचका, दोनों हथेलियों को रगड़ते हुए अपने चेहरे पर लगाया।पाउडर लगाने के बाद चेहरे पर सफेदी झलकने लगी। पास में रखे गमछे को उठाकर चेहरा रगड़ा।आइना में दमकते चेहरे की चमक उसके चेहरे पर मुस्कान बिखेर दी। गलमूँछों को सहलाते हुए ताव देकर सँवारा।

"आज कितना सज-सँवर रहे हो, नहीं जाना क्या? नास्ता टेबल पर रखे-रखे ही ठंडा हो रहा है।" पत्नी ने रसोई घर से ही आवाज लगाई।

"हाँ हो गया, बस आ रहा हूँ।" कहते हुए रामसेवक टेबल के पास आ गया।

मनपसंद मेथी की कचौड़ी भी दो से अधिक नहीं खा सका। अपनी वर्दी को फिर से आयरन से कड़क करके पहना और अपना मोटा डंडा और टोपी साईकिल के कैरियर में फँसाकर ड्युटी पर जेल के लिए निकल पड़ा।

जेल के गेट पर उसकी उपस्थिति उसके रौबदार मूँछ व बेल्ट से दबकर कसमसाती हुई बटनों के बीच से झांकती तोंद के कारण वजनदार लगती है।कई सिपाही खड़े रहते हैं पर रामसेवक पर ही सबकी नज़र पहले टिकती है। उसके बिन वहाँ की धरती भी हल्की सी लगती है।

"क्या बात है राम सेवक, आज तो और चमक रहे हो।कड़क ड्रेस, तनी मूँछे और काले बाल, नये सुप्रीटेंडेंट साहब को खुश करना चाहते हो क्या?" पास मे खड़े सिपाही मित्र ने ठिठोली करते हुए कहा।

वह कुछ प्रतिक्रिया देने ही वाला था कि जीप के आने की आवाज सुनाई दी। सभी सिपाही चौकन्ने हो अपने-अपने डंडे को सर्तकता से पकड़ सावधान हो गये। धड़-धड़ा-धड़ कई छोटे-बड़े अधिकारी जीप से उतरे और उनसे घीरे नये सुप्रीटेंडेंट महोदय का रौब ही अलग। हृष्ट-पुष्ट सुडौल डिलडौल वाला व्यक्तित्व, चेहरे पर तेज़ आभा, कुछ तो गौर्य रंग व कुछ पद की चमक से धरती रोशन होने लगी। शेरों की झुंड में बब्बर शेर सा शक्तियों को समेटे चलते रहे।

कई छोटे अधिकारी इसारों-ही-इसारों में सभी को हिदायत देते हुए आगे बढ़ते रहे। जिन

अधिकारियों को वह सुबह–शाम सलाम करता है तथा उनकी झिड़कियाँ बरदास्त करता है, आज सभी उन्हीं के पीछे हैं। रामसेवक ने दूर से ही अपनी नज़रें सुप्रीटेंडेंट पर गड़ा ली। शरीर में खुशी की लहर रोम–रोम को पुलकित करती रही।

जैसे ही सुप्रीटेंडेंट महोदय करीब आये, सभी ने रीढ़ तानकर सैल्यूट से स्वागत किया। सभी की तने हाथ कुछ देर वैसे ही चिपके रहे। रामसेवक पर नज़र पड़ते ही सुप्रीटेंडेंट ने अपनी नज़रें झुका ली।

सुप्रीटेंडेंट साहब के अंदर जाते ही माहौल सामान्य हो गया। सभी हँसी–ठिठौली में लग गये। पर ये क्या रामसेवक अब भी वैसे ही हाथ ताने खड़ा है मानो माथे की चुंबकीय शक्ति ने उँगलियों को जकड़ लिया हो। आँखें छलछला रहीं हैं। गेहुँए चेहरे से ताँबाई लालिमा फूट रही है।

" अरे राम सेवक, अब हाथ नीचे कर। साहब चले गये।" कहते हुए सिपाही मित्र ने उसका हाथ खींच दिया और कहा–

"क्यों भाई कहाँ खो गये और ये आँसू क्यों? कभी भी तुम इतने भावुक नहीं हुए, आज क्या हो गया तुम्हें?"

रामसेवक ने पलकें झपझपाई, होठों की थरथराहट से चंद शब्द निकले– "आज मैं सैल्यूट करके गद्गद् हो गया दीनानाथ, वह तो मेरा बेटा है।"

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें